International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.newresearchjournal.com/academic
Volume 1; Issue 3; March 2016; Page No. 129-130

पारस्कर गृह्यसूत्रों में चूड़ाकरण संस्कार : एक विवेचन

अनिल कुमार

शोध–छात्र, संस्कृत, पालि, प्राकृत विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, हरियाणा, भारत

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति के इतिहास में वेदों का स्थान गौरवपूर्ण है। श्रुति की दृढ़ आधारशिला के ऊपर भारतीय धर्म तथा सभ्यता का भव्य विशाल प्रासाद प्रतिष्ठित है। हिन्दुओं के आचार–विचार, रहन–सहन, धर्म–कर्म को भली भाँति समझने के लिए वेदों का ज्ञान आवश्यक है। हिन्दू–संस्कारों का वर्णन वेदों के कुछ सूक्तों, कतिपय ब्राह्मण–ग्रन्थों गृह्यसूत्रों तथा धर्म सूत्रों, स्मृतियों एवं प्रवृत्ति निबन्ध–ग्रन्थों में पाया जाता है। ये ग्रन्थ विभिन्न युगों तथा स्थानों में उद्गार, विधि अथवा पद्धति के रूप में लिखे गये। 'संस्कार' हिन्दू–धर्म अथवा किसी भी सम्प्रदाय के महत्त्वपूर्ण अंग है। संस्कार मुख्यतः धार्मिक विश्वासों और सामाजिक परिस्थितियों पर आधारित थे। जो मूल में प्राकृतिक थे वे भी क्रमशः सांस्कृतिक होते गये। वास्तव में संस्कार व्यंजक तथा प्रतीकात्मक अनुष्ठान है'। इनके आधारभूत तत्वों का रहस्य समझे बिना संस्कार सामान्य लोगों को बाल–क्रीडा जैसे प्रतीत होंगे। उनको सुगम बनाने के लिए प्रतीको का अनावरण तथा व्याख्या और विविध अंगो का स्पष्टीकरण आवश्यक है। संस्कार प्राचीन भारतीय समाज के आदर्शो तथा महत्त्वाकाक्षाओं को भी प्रकट करते हैं।

संस्कार शब्द की उत्पत्ति एवं अर्थ

संस्कार शब्द 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'डुकृञ् करणे' धातु से घञ् प्रत्यय होकर निष्पादन होता है और इसका प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। 'आप्टे' ने इसका अर्थ पूर्ण करना, संस्कृत करना आदि किये हैं। 'संस्कार' यह शब्द यथावत् प्राचीन वैदिक ग्रन्थों में नही मिलता। इस अर्थ के द्योतक अन्य शब्दों का व्यवहार ऋग्वेदादि ग्रन्थों में दृष्टिगोचर होता है। 'ऋग्वेद' में संस्कृत तथा शतपथ–ब्राह्मण में संस्कुरू इत्यादि। ये शब्द इन ग्रन्थों में संस्कार शब्द के अर्थ में प्रयुक्त हुए है; क्योंकि इन ग्रन्थों में ये शब्द यज्ञ के प्रसंग में देवताओं को हविरत्न प्रदान करते हुए उसे यज्ञ के योग्य बनाने के अर्थो में प्रयुक्त हुए है। ''संस्क्रियते अनेनेति संस्कार'' अर्थात् जिनके द्वारा वस्तु या पदार्थ को परिमार्जित या शुद्ध किया जाये, वह संस्कार है। हिन्दू धर्म–कोश के अनुसार शरीर एवं वस्तुओं की शुद्धि एवं उनके विकास के लिए समय–समय पर जो कर्म किये जाते हैं, उन्हे संस्कार कहते हैं। 'आचार्य चरक' के अनुसार 'संस्कारों हि गुणान्तराधानमुच्यते' अर्थात् पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनके स्थान पर सद्गुणों का संचार करना ही संस्कार है।

याज्ञवल्क्य के अनुसार संस्कार वे क्रियाएँ है, जिनमें गर्भादि से सम्बन्ध पापकर्म दूर हो जाते हैं। शंकराचार्य ने गुणाधान या दोषापनयन को संस्कार माना है। अद्वैतवेदान्त का कथन है कि जीवन पर शारीरिक क्रियाओं का मिथ्या आरोप संस्कार है। गृह्यसूत्रों में संस्कारों का निरूपण 'संस्कार' के नाम से न होकर अन्य यज्ञ नामों से है। वहाँ 'संस्कार' शब्द का प्रयोग पंचभू संस्कार और पाक संस्कार आदि के रूप में किया जाता है। जिसका अभिप्राय यज्ञीय भूमि–मार्जन शुद्धि तथा आहवनीय समाग्री को उबालना तथा तैयार करना है। अतः गृह्यसूत्रों में विहित ये संस्कार सभी जीवों का चरित्र निर्माण कर यथानुरूप जीवन यापन की योग्यता प्रदान करते हैं। संस्कार शब्द के विभिन्न अर्थो पर दृष्टिपात करने से ऐसा प्रतीत है कि वस्तु को किसी के योग्य बनाने हेतु समार्जन शोधन आदि के द्वारा उस कार्य के योग्य बनाया जाता है।

संस्कारों की संख्या

संस्कारों की संख्या के विषय में धर्मशास्त्रकार एक–मत नहीं है। कुछ ने संस्कारों की संख्या सोलह मानी हैं और कुछ ने चालीस तक।

गृह्यसूत्र साधारण

विवाह से आरम्भ कर समावर्तन पर्यन्त दैहिक संस्कारों का निरूपण करते हैं। उनमें अधिकांश अन्त्येष्टि का उल्लेख नहीं करते। केवल पाराशर, आश्वलायन तथा बौधायन आदि ही इसका वर्णन करते हैं। गृह्यसूत्रों में वर्णित संस्कारों की संख्या निम्नलिखित प्रकार से हैं। प्रत्येक में थोड़ा बहुत भेद है तथा कहीं कुछ बढ़ाया गया है और कहीं घटाया गया है। पारस्कर के अनुसार विवाह, गर्भाधान पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन चूड़ाकरण,उपनयन, केशान्त, समावर्तन तथा अन्त्येष्टि। ये संस्कार हैं। आश्वलायन के अनुसार ग्यारह हैं। इसमें निष्क्रमण व केशान्त संस्कार का अभाव है। बौधायन गृह्यसूत्र के अनुसार तेरह तथा वैखानस गृह्यसूत्र के अनुसार अट्ठारह संस्कारों का वर्णन मिलता है। मनु और याज्ञवल्क्य दोनों स्मृतिकारों ने गर्भाधान, पुंसवन, उपनयन केशान्त, समावर्तन, विवाह, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामधेय, निष्क्रमण, अन्नप्राश्न, चूड़ाकर्म और अन्त्येष्टि सहित तेरह संस्कारों का उल्लेख किया है। जबकि स्वामी दयानन्द ने गर्भाधान से अन्त्येष्टि पर्यन्त सोलह संस्कार, माने हैं। महर्षि गौतम ने भी अन्त्येष्टि को संस्कारों के अन्तर्गत परिगणित नही किया है। 'राजबलि पाण्डेय' के अनुसार इसका कारण सम्भवतः यह रहा होगा कि एक अशुभ संस्कार है और शुभ संस्कारों के साथ इसका वर्णन करना उचित नहीं समझा गया होगा। लेकिन मनु एवं याज्ञवल्क्य दोनों स्मृतिकारों ने इसकी गणना षोडश संस्कार के अन्तर्गत की है और साथ ही अन्त्येष्टि संस्कार को समन्त्र संस्कारों में से एक माना है।

चूड़ाकरण संस्कार व प्रयोजन

जब बालक का जन्म होता है तो वह दो प्रकार के संस्कारों से युक्त होता है। प्रथम जन्म जन्मान्त के संस्कारों से युक्त होता है तथा दूसरा माता–पिता के संस्कारों को वंश परम्परा के रूप में प्राप्त करता है। इस पर मनु ने कहा कि संस्कार मनुष्य के इस जन्म व परजन्म दोनों को पवित्र करने वाले होते हैं। गर्भाधान आदि संस्कारों से बीज सम्बन्धी उत्पन्न दोष जो दुष्कृत संस्कार है, वे दूर हो जाते हैं। इसके साथ–साथ गर्भकाल में माता–पिता से प्राप्त होने वाले बुरे आचरण से उत्पन्न दोष एवं अनेक प्रकार की अशुद्धियाँ भी दूर हो जाती है। चूड़ाकरण संस्कार की उत्पत्ति प्राचीन काल में ही हो चुकी थी। चूड़ाकरण का अर्थ है– मुण्डन या केशान्त। सिर को

स्वच्छ रखने के लिए किसी न किसी उपाय का आविष्कार होना अनिवार्य था। केशच्छेदन का यही प्रयोजन था। परन्तु किसी लौहे औजार के साथ केशच्छेदन एक नवीन तथा भयपूर्ण दृश्य था, लोग डरते थे कि आघात या किसी प्रकार की हानि हो सकती है। आवश्यकता तथा भय दोनों परस्पर मिश्रित हो गये तथा चूड़ाकरण सम्बन्धी विधि विधानों को व्यवस्थित रूप प्राप्त हुआ। पारस्कर गृह्यसूत्रों में भी इस संस्कार की विधि तथा नियमों का निर्देश किया है। दीर्घायु, स्वास्थ्य, सौन्दर्य एवम् कल्याण की प्राप्ति के लिए चूड़ाकरण से बच्चे को संस्कारित किया जाता है, इसका किया जाना आवश्यक है। इसके सम्पन्न न करने पर आयु क्षीण होती है। अतः प्रत्येक दशा में यह संस्कार किया जाना चाहिए। आयुर्वेद में भी इसका वर्णन किया है। आचार्य सुश्रुत का कथन है कि केश, नरण तथा रोमों के उपमार्जन (छेदन) से हर्ष, लाडाव, सौभाग्य और उत्साह की वृद्धि तथा पाप का अपशमन होता है। चरक के मत में केश, श्मश्रु तथा नखों के काटने तथा प्रसाधन से पौष्टिकता बल आयुष्य और सौन्दर्य की प्राप्ति है।

वैदिककाल में चूड़ाकरण संस्कार :

चूड़ाकरण संस्कार के अवसर पर गृह्यसूत्रों में व्यवहृत सभी मन्त्र वैदिक साहित्य में उपलब्ध होते हैं तथा उनसे यह सूचित होता है कि उनकी रचना केशच्छेदन के प्रयोजन के लिए ही हुई थी। मुण्डन के लिए सिर के भिगोने का 'अथर्ववेद' में उल्लेख है। मुण्डन में व्यवहृत छूरे की स्तुत्ति तथा उससे अहानिकर होने की प्रार्थना की जाती हैः 'नाम से तू शिव है। लोहा तेरा पिता है। मैं तुझे नमस्कार करता हूँ तथा तू शिशु की हिंसा न करना।' चूड़ाकरण एक धार्मिक संस्कार था, जिसमें शिर का भिगोना, छूरे की स्तुत्ति, नापित को निमन्त्रण, वैदिक मन्त्रों के साथ केशच्छेदन तथा दीर्घायुष्य, समृद्धि, वीर्य तथा शिशु की सन्तान के लिए भी कामना की जाती थी।

संस्कार का समय

गृह्यसूत्रों के मतानुसार चुड़ाकरण संस्कार जन्म के पश्चात् प्रथम वर्ष के अन्त में अथवा तृतीय वर्ष की समाप्ति के पूर्व सम्पन्न होता है। स्मृतिकार मनु भी यही विधान करते हैं। वे लिखते है कि वेदों के नियमानुसार धर्मपूर्वक चूड़ाकरण प्रथम अथवा तृतीय वर्ष में सम्पन्न करना चाहिए। कतिपय आचार्यो का मत है कि यह उपनयन संस्कार के साथ भी किया जा सकता है, जो सात वर्ष की आयु के पश्चात भी सम्पन्न हो सकता है। तृतीय वर्ष में सम्पन्न चूड़ाकरण को विद्वान् सर्वोतम समझते हैं। षष्ठ अथवा सप्तम वर्ष में यह साधारण हैं; किन्तु दसवें अथवा ग्यारहवें वर्ष में यह निष्कृष्टतम माना जाता है।

विधि

चूड़ाकरण संस्कार के लिए एक दिन (शुभ) निश्चित कर लिया जाता है। आरम्भ में संकल्प, गणेश की पूजा, मंगल श्राद्ध आदि प्रारम्भिक कृत्य सम्पन्न किये जाते हैं; तब ब्राह्मण भोजन होता था। फिर माता बालक को स्नान कराकर बिना धूले अर्थात् नवीन वस्त्र धारण कराती है और कहती है केश का कर्तन करो। बालक के पिता द्वारा मक्खन का गोला या दही के पिण्ड को पानी के साथ मिलाकर उससे दाहिने कान की ओर के केशों को यह कहते हुए भिगोया जाता है कि सविता की प्रेरणा से दिव्य जल देह को शुद्ध करे। जिससे वह दीर्घायु तथा तेज को प्राप्त कर सके। उसके बाद दो श्वेत बिन्दूओं से युक्त साही के काँटे से केशों को विकर्ण कर उनमें यह कहते हुए कुश के तीन टुकड़ों को रखता है कि ओ कुश! शिशु की रक्षा करो, उसे पीड़ा न पहुँचाओ। तदुपरान्त पिता 'शिवो नामेति.....।' इत्यादि मन्त्र पढ़कर लौहे का छूरा लेता है और यह मन्त्र जिसका भाव है कि वह छूरा जिससे विद्वान सविता ने राजा सोम तथा वरूण का छोर कर्म किया था। हे ब्रह्मन्! दीर्घायु तथा वृद्धावस्था की प्राप्ति के लिए उसी छूरे से इसके सिर का मुण्डन करो– कहते हुए केश काटे। तब कुश–तरूणों के साथ केशो को काटकर अग्नि के उत्तर में रखे बैल के गोबर के पिण्ड पर डाल दिया जाता है। इसी प्रकार अन्य केशो की दो लटे बिना मन्त्रोचारण के काट दी जाती है। तदनन्तर 'येन भूरिश्चरा' इत्यादि मन्त्रों को पढ़ते हुए क्रमशः सिर के पीछे की ओर बाँयी ओर केशों को भी काट देना चाहिए। जब पिता सुन्दर आकृति वाले छूरे से बालक के सिर का मुण्डन करता है, तब इस मन्त्र को पढ़ते हुए बाँयी ओर से दाहिनी ओर तीन बार बालों को काटता है कि मैं जीवन हेतू के लिए दीर्घायु, सोभन और कल्याण के लिए तुम्हारा मुण्डन करता हूँ। वह पुनः उसी जल से उसके सिर को भिगोकर छूरा नामित को यह कहते हुए देता है कि बिना आघात पहुँचाए इस शिशु के केशों का छेदन करो। सिर के ऊपर कुल की परम्परानुसार शिखा के रूप में कुछ केश–गुच्छ छोड़ दिये जाते हैं। तत्पश्चात् उस केश युक्त गोमय पिण्ड को गोशाल, छोटी तलैया या जलाशय के समीप कही दबा देना चाहिए। इस संस्कार के अन्त में आचार्य को गाय दक्षिणा में देनी चाहिए।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. कात्यायन–श्रौतसूत्र : भाग 1–2, नित्यानन्द पंत और गोपाल शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी, 1928, 1939।
2. निरूक्त (यास्क) : दूर्गाचार्यवर्त्तिसहिता बम्बई संस्करण 1982।
3. पारस्कर गृह्यसूत्र : खेमराज श्री कृष्णदास, बोम्बे, 1851।
4. प्राचीन भारतीय संस्कृति : कुमार विरेन्द्र।
5. मनुस्मृति : जे0आर0 घारपूरे, बाम्बे, 1920।
6. हिन्दू संस्कार : पाण्डेय राजबली।